विश्व का इतिहास पुनर्जागरण के लक्षण (विशेषताएँ)

डॉ. के.के. पटेल
विभागाध्यक्ष इतिहास विभाग
दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर

पुनर्जागरण ऐतिहासिक प्रक्रिया है जिसने मध्य कालीन विश्वको आधुनिक विश्व में परिवर्तित कर दिया। इस प्रक्रिया न सिर्फ एक नवीन दृष्टि, नवीन विचार और नवीन मूल्य पद्धतियों का विकास किया, बल्कि नवीन संस्थानों और जमीन संगठनों का भी उदय हुआ। इन्ही प्रक्रियाओं ने आधुनिक विश्व का निर्माण किया। पुनर्जागरण के साथ ही मध्य कालीन सामंती मूल्यों का अवसान प्रारंभ हो जाता है और मध्य कालीन मान्यताएं इन नई प्रगतिशील मान्यताओं से पीछे छूटने लगती है। यही कारण है कि पुनर्जागरण से आधुनिक विश्व का आरंभ माना जाता है।

पुनर्जागरण का शाब्दिक अर्थ होता है – पुनर्जीवित होना या पुनर्जागृत होना। यहां इसका विशेष अर्थ है– प्राचीन ग्रीक और रोमन साहित्य का पुनरुत्थान इस शब्द के अर्थ में भी समय–समय पर परिवर्तन आते गए है व इसका विस्तार किया जाता रहा है। इस शब्द का अर्थ उसकी समग्रता में इतिहासवेत्ताओं के लिए एक चुनौती बन गया क्योंकि यह विभिन्न एवं कुछ बातों में परस्पर विरोधी प्रक्रियाओं का योग हैं।

पुनर्जागरण की अवधारणा को स्पष्ट करने के लिए यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम मध्य युग की अवधारणा को स्पष्ट किया जाये। मध्य युग (Middle Age) शब्द का पहली बार प्रयोग 17वीं सदी में क्रिस्टोफर केलर (Christopher Keller) में किया था। इस शब्द का प्रयोग उसने रोमन साम्राज्य के अवसान तथा पुनर्जागरण, धर्मसुधार आन्दोलन, वाणिज्यिक क्रांति, भौगोलिक खोजों तथा राष्ट्रीय राज्यों के उदय द्वारा प्रेरित तथाकथित आधुनिक युग के बीच के काल के लिये किया है।

साहित्य **(Literature)**

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति साहित्य के क्षेत्र में हुई। फ्रांसिस्को पेट्रार्क (Frances Petrarch) को 'इटालियन पुनर्जागरण साहित्य का पिता' कहा जाता है। वह पुनर्जागरण का सबसे पहला मानवतावादी था। उनकी कृतियाँ 'Africa' & 'Trionfi' में पुनर्जागरण की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उसने अनेक 'Somer' की भी रचना की। स्पेन व लेखक सबैन्टीज (Cervantes) ने अपनी पुस्तक 'Don Quixote' में

सामन्तवादी मूल्यों का उपहास किया। एक अन्य प्रमुख लैटिन विद्वान दाते (Dante) की कृति 'Devine Commedy में भी पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। एक अन्य प्रमुख विद्वान है– इरास्मसा (Erasmus) जिनकी पुस्तकों का नाम है– In Praise of Folly & Handbook of a Christian Knight इनमें इस चेतना की अभिव्यक्ति मिलती है। एक अन्य प्रमुख साहित्यकार है–थॉमस मोर (Thomas More) जिनकी पुस्तक का नाम है 'Utopia' निकोलो मैकियावेली (Nicolo Machiavelli) को कृति "The Prince' में भी पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति हुई है।

साहित्य (Literature)			
नाम (Name)	व्यवसाय (Profession)	कृति (Works)	विस्तार (Details)
मैकियावली	राजनीतिक लेखक	द प्रिंस	शासकों के निर्देश के लिए राजनीतिक अवधानणा।
दांते	कवि	डिवाइन कॉमडी	एक महाकाव्यात्मक कविता जिसके देश के प्रति प्रेम तथा समकालीन इटली के सामाजिक और द्य धार्मिक जीवन का वर्णन मिलता है।
पेटार्क	विद्वान मानवतावाद का जनक	कैन्जोनीरे	जीवन के आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं का वर्णन
बोकासियो	गद्य लेखक इटालियन गद्य का जनक	डिकैमरून	एक से उपन्यासों का संग्रह जिनमें नैतिकता एक गुणों को उजागर किया गया है।
जियोफेरी चॉसर	कवि अंग्रेजी पद्य का जनक	द कैन्टवरी टेल्स	केन्द्रीय चरित्र के द्वारा सामाजिक, धार्मिक एवं नैतिक मुद्दों को उजागर किया जो उसने अपनी लंबी यात्रा में प्राप्त किया था।
थॉमस मूर	गद्य लेखक	यूटोपिया	एक आदर्श समाज, जहाँ कोई शोषण और वर्ग भिन्नता न हो।
विलियम शेक्सपीयर	नाटककार रंगकर्मी कवि	जूलियस सीजर, मैकबेथ, हेलमेट	मानवी संबंधों विरोधों और निदानों पर आधारित नाटकों की रचना
जॉन मिल्टन	कवि	पैराडाइज लॉस्ट	शैतान का पतन और ईश्वर के साथ उसका संघर्ष

मांटेग्यू	निबन्धकार	एशेज	प्राधिकार के विरुद्ध लेखन जिसमें अतीत के दुःख और मानव के वास्तविक जीवन का अनुभव शामिल
सर्वेन्टीज	लेखक	डॉन क्यूजेट	साहसी मूल्यों/सामंती मूल्यों का उपहास और उपलब्धियों के संबंध में चर्चा

कला (Art)

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति कला के क्षेत्र में भी देखने को मिलती है। इस काल में कलाकारों की अपनी स्वतंत्र पहचान बनी और वे अपनी कृतियों पर गर्व भी करने लगे। कला के क्षेत्र में यह अभिव्यक्ति चित्रकला, मूर्तिकला, और स्थापत्य कला के क्षेत्र में विशेष रूप से देखने को मिलता है।

चित्रकला (Painting)

इटली में चित्रकला का पर्याप्त विकास हुआ। पुनर्जागरण काल के आरंभिक चित्रकारों ने इसाई धर्म से चुने गए प्रसंगों, यथा–स्वर्ग, नरक, अन्तिम न्याय आदि विषयों को गिरजाघर की दीवारों तथा अन्य स्थानों पर चित्रित किया। बाद के कलाकारों द्वारा ईसाई कथा का खुल कर चित्रण किया गया साथ ही उन्होंने यूनानी और रोमन विषयों पर भी चित्रकारी की। इस काल के चित्रकारों ने कला को कला के लिये मान कर चित्रण किया।

मूर्तिकला (Sculpture)

पुनर्जागरण कालीन चेतना की अभिव्यक्ति मूर्तिकला के क्षेत्र में भी हुई। मध्य युग में का मुख्यतः इसाई संतों की मूर्तियों का निर्माण किया जाता था वही इस काल की मूर्तिकला के अब ऐसा कोई बन्धन नहीं रहा। इस काल की मूर्तिकला की मुख्य विशेषता यह है कि अब मूर्तिया खड़ी बनाई जाने लगीं। शरीर रचना से संबंधित नए ज्ञान एवं सौंदर्य के नए माप ने मूर्तिकला को प्रभावित किया।

चित्रकला और मूर्तिकला (Painting and Sculpture)			
नाम (Name)	व्यवसाय (Profession)	कृति (Creation)	विस्तार (Details)
लियोनार्डो द विन्ची	मूर्तिकार, चित्रकार, कलाकार	द लास्ट सफर, मोनालिसा	चित्रकला प्रकृति की नकल थी। कलाकार एक प्रेरित

			रचनात्मक थी।
माइकल एंजेलो	मूर्तिकार, चित्रकार	डेविड पियेता सिस्टीन चापेल में चित्र	मानवीय रूप की उपस्थिति शक्ति और विलक्षणता को बता रही थी।
राफेल	चित्रकार	मिस्टीन मैडोना चिर्गी चापेल चित्र	पोप की सेवा में कार्य, यह चित्र बुध्दि और प्रतिस्ठा को प्रदर्शित करता है।
लोरेंजो घिवर्टी	मूर्तिकार	फ्लोरंग स्थित बैपटिस्टरी के लिए दो कांस्य दरवाजे	यह दरवाजा स्वर्ग द्वार के समान था।
डोनेटेलो	मूर्तिकार	डेविड की कांस्य प्रतिमा, सेलिन ग्लोएथ के शरीर के ऊपर विजय चिन्हरूप	कला के क्षेत्र में प्रथम नग्न मूर्ति, जो 13 फूट लंबी थी तथा जो मानवीय रूप की सुंदरता को दर्शाती है।

स्थापत्य कला (Architecture)

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति स्थापत्य कला के क्षेत्र में भी हुई। पुनर्जागरण से पूर्व इस की 12वीं और 13वीं सदियों में गिराजाघरों के निर्माण में गोथिक शैली का इस्तेमाल किया जाता था। कमानीदार छतें, नुकीले मेहराब और टेक इस स्थापत्य शैली की बुनियादी विशेषताएं थी। फ्रांस का लूब्रे (Laevero) म्युजियम और रीम (Reim) कैथेड्रल इस शैली के उत्कृष्ट उदाहरण है। लेकिन पुनर्जागरण चेतना के प्रभाव में गोथिक स्थापत्य कला का अवसान होने लगा। इस काल के वास्तुविद् इस स्थापत्य को पारलौकिक मानते थे और गोथिक नाम इसलिये दिया गया कि वे इसे तुच्छ और हेय मानते थे।

स्थापत्य की नई शैलियों का विकास पहले इटली में शुरू हुआ और बाद में यूरोप के अन्य भागों में। रोम में स्थित सेंट पीटर गिरजाघर (St- Peter's Church at Rome) | नई शैली के ये भवन, जिनमें से अनेक गिरजाघर थे, विशुद्ध गैर–धार्मिक

भावों को अभिव्यक्त करते है। इस तरह पुनर्जागरण काल में गोथिक स्थापत्य कला का अवसान हो गया और नई शैलियों का विकास हुआ।

विज्ञान (Science)

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति विज्ञान के क्षेत्रों में भी हुई। इस युग के लोगों में जिज्ञासा एवं खोजी दृष्टि का उदय हुआ, जिसके कारण ये लोग नई चीजों की खोजों की ओर प्रवृत्त हुए। इस युग के चित्रकारों का मानना है कि प्रकृति का अध्ययन और अन्वेषण करके ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है न कि महज चिंतन करने से।

विज्ञान और गणित (Science and Mathematics)		
नाम (Name)	व्यवसाय (Professian)	अन्वेषण (Disecoveries)
निकोलस कोपरनिकस	वैज्ञानिक	इसने साबित किया कि पृथ्वी गोल चन्द्रमा और ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है।
जोहान्स गैलिली	वैज्ञानिक	इसने साबित किया कि पृथ्वी और दूसरे के चारों और वृत्ताकार पथ में नहीं (दीर्घ वृत्ताकार) पथ में परिक्रमा करते हैं।
गैलीलियो गैलिली	वैज्ञानिक	इसने साबित किया कि गिरते हुए वस्तु उसकी दूरी पर निर्भर करती है, न कि उसके वनज पर इसने थर्मामीटर और हाइड्रोस्टैसिक संतुलन खोज की।
सर आइजक न्यूटन	वैज्ञानिक	इसने सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांतो खोज की ।
विलियम हार्वे	जीव वैज्ञानिक	मानव शरीर में रक्त परिसंचरण का विस्तार से वर्णन किया।
एडमंड हिलेरी	जीव वैज्ञानिक	धूमकेतु के कक्ष की गणना की. साथ ही इसकी वापसी के वर्षों की भी गणना की। इनके बाद उनके द्वारा खोजे गए धूमकेतु को 'हेली' नाम दिया
रेने डिसकार्टेज	जीव वैज्ञानिक	विश्लेषणात्मक ज्यामिति का प्रतिपादन किया।

दर्शन (Philosophy)

पुनर्जागरण चेतना की अभिव्यक्ति दर्शन के क्षेत्र में भी देखने को मिलती है। इस काल के आरंभिक दार्शनिकों ने मध्य युगीन रूढ़िवादी तर्कशास्त्र की आलोचना की और नए दर्शन क प्रतिपादन किया। उन्होंने अरस्तू की जगह सिसरो को अपना आदर्श माना और नैतिक दर्शन पर अत्यधिक बल दिया। आगे बहुत–से दार्शनिक प्लेटोवादी हो गए, जो नव–प्लेटोवादी (Neo Platonists) के नाम से जाने गए। यहां तक कि फ्लोरेंस में प्लेटोनिक सोसायटी की स्थापना की गई। आरंभिक दार्शनिकों में फिसिनो और मिरांदोला प्रमुख है किन्तु सभी इटालवी दार्शनिकों में लोरेंजोवल्ला, लियोनिर्डी, प्रमुख हैं।

निष्कर्ष (Conclusion)

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यूरोप में आई पुनर्जागरण चेतना ने न सिर्फ यूरोपवासियों को मध्य कालीन चेतना से बाहर निकाला वरन् उन्हें आधुनिक चेतना से साक्षात्कार भी कराया। यही कारण है कि, अनेक विद्वान पुनर्जागरण चेतना को आधुनिक विश्व की शुरुआत मानते हैं। आधुनिक इतिहास लेखक इस बात से पूरी तरह सहमत नहीं हैं। उनका मानना है कि पुनर्जागरण जहां एक ओर आधुनिक चेतना से जुड़ा हुआ था वहीं दूसरी ओर यह मध्य कालीन चेतना से पूरी तरह संबंध विच्छेद नहीं कर पाया। इसलिये इसे पूरी तरह आधुनिक चेतना मानना गैर–ऐतिहासिक होगा। निष्कर्ष के तौर पर यह कहा जा सकता है कि अगर इसे पूरी तरह आधुनिक चेतना न भी मानें तो भी इस चेतना की मध्य कालीन चेतना और आधुनिक कालीन चेतना का संक्रमण–काल (transitional phase) तो माना ही जा सकता है।